4

बुधवार, वीरवार, शुक्रवार

मत्ती 26:1-35; मरकुस 14:1-31;
लूका 22:1-38; यूहन्ना 13-17

> *"... जब यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा" (यूहन्ना 13:1)।*

मंगलवार की शब्दों की लड़ाइयों के बाद, परमेश्वर ने यीशु को एक दिन की छुट्टी दे दी। हम नहीं जानते कि बुधवार को वह कहां गया और किसके साथ रहा या उसने। खामोशी हम पर गरजती है! यीशु द्वारा सदूकियों को हटाने से फरीसी आनन्दित थे, परन्तु यीशु द्वारा उन्हें भी खामोश कर देने से उनकी खुशी तुरन्त नफ़रत में बदल गई। उसके शत्रुओं का तर्क था, "हम उसका जवाब दे नहीं सकते, इसलिए हम उसे मार डालेंगे।"

इस दिन यीशु व्यस्त हो न हो, पर यहूदा अवश्य व्यस्त था। उसके द्वारा पकड़वाया जाना आवेश में आकर नहीं, बल्कि सोच-समझकर किया गया था। महासभा अर्थात यहूदियों की उच्च सभा भी गुप्त बैठक करने के लिए व्यस्त थी। शैतान भी व्यस्त था। बुधवार का दिन तूफ़ान से पहले की शांति भरा था। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह दिन यीशु ने परमेश्वर की प्रार्थना में बिताया!

फसह के लिए तैयारी करना

गुरुवार सुबह यीशु फिर कभी न सोने के लिए जागा। वह "घड़ी" आ चुकी थी। बुधवार के विश्राम के बाद यीशु फिर से क्रूस की ओर चल पड़ा। होने वाली हर बात उसके हाथ में थी। दूसरों को लगता था कि उनके हाथ में है, जबकि ऐसा नहीं था। क्रूस की योजना और उसे लागू करना उसी की ओर से था। वह दृढ़ संकल्प था, परन्तु जल्दबाज़ी में नहीं।

इस दिन का उद्देश्य फसह के भोज की तैयारी करना था (मत्ती 26:17-19; मरकुस 14:12-16; लूका 22:7-13)। यीशु ने अपने प्रेरितों से पानी का घड़ा ले जा रहे आदमी को ढूंढ़ कर उसके पीछे जाने को कहा। यरूशलेम में ऐसा करने वाला केवल वही आदमी होना था, क्योंकि यह "औरतों का काम" था। प्रेरितों ने वैसे ही किया, जैसे उसने कहा था और एक कमरा तैयार किया हुआ पाया। विचार करें कि यह कितना हैरान करने वाला था! उन्हें एक बड़ा कमरा चाहिए था। फसह समूह के लिए था। यरूशलेम बाहर से आए लोगों से भरा हुआ था। निश्चय ही कोई

कमरा खाली न था। यह कमरा खाली होने के साथ-साथ, तैयार भी किया हुआ था! यह कैसे हो गया? परमेश्वर का अद्‌भुत उपाय काम कर रहा था! परमेश्वर हमारे जीवनों में भी असम्भव बातों को सम्भव बना सकता है।

प्रेरितों के साथ यह फसह खाने में यीशु की गहरी दिलचस्पी थी (लूका 22:14-16)। इसके कई कारण दिए जा सकते हैं: (1) अपने कष्ट के निकट आने के कारण यीशु ने फसह खाने की अपनी इच्छा बताई। वह प्रेरितों की संगति चाहता था और उसे इसकी आवश्यकता थी। (2) इसके अलावा, यह परमेश्वर का अन्तिम फसह का भोज होना था। यीशु ने मूसा की व्यवस्था को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया (कुलुस्सियों 2:14)। परमेश्वर ने ज़ोर दिया था, उसे ले लिया। (3) यीशु अब हमारा निरन्तर फसह है (1 कुरिन्थियों 5:7)। (4) ऊपरी कमरे में फसह खाने की इस परिस्थिति में, यीशु ने अपना फसह आरम्भ किया।

दो बातें अर्थात (1) पवित्र शास्त्र का अधिकार और (2) यीशु की आज्ञाकारिता, हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। यीशु ने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया! मूसा की व्यवस्था के अधीन वह पैदा हुआ, रहा और मरा। उसने सच्चे मन से मूसा की व्यवस्था की एक-एक बिंदी को पूरा किया (मत्ती 5:17-20), परन्तु फरीसियों द्वारा बनाए गए मनुष्यों के नियमों को उसने नहीं माना। *पवित्र शास्त्र की बेकद्री न करें। स्नेहपूर्वक झूठी शिक्षा देने वालों तथा झूठी शिक्षा का विरोध करें।*

अंगोछे से सेवा करना

अब हम गुरुवार रात, अर्थात यहूदियों के शुक्रवार के आरम्भ में आते हैं। यीशु की मृत्यु निकट होने पर, प्रेरित इस बात पर झगड़ रहे थे कि उनमें सबसे बड़ा कौन है (लूका 22:24-30) क्या यहूदा भी इस झगड़े में शामिल होगा? उसने मरियम के विरुद्ध और यीशु के सम्मान में किए गए अभिषेक के लिए फटकार लगाने में अगुआई की थी (यूहन्ना 12:1-8)। उसके व्यवहार से पता चल गया था कि उसके मन में क्या था।

हर समूह में ऐसा अगुआ होना आवश्यक होता है, जिस पर ज़िम्मेदारी डाली जा सके। यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अगुवे बनाने के लिए चुना। क्या प्रेरितों में नाराज़गी, द्वेष या संघर्ष चल रहा होगा?

यहूदा द्वारा यीशु को पकड़वाना अचानक नहीं हुआ था। भोज पर बैठे चिंगारी फूटी हो सकती है, परन्तु समस्या यहीं तक नहीं थी। यीशु ने यह कहते हुए कि ‘‘तुम में ऐसा न हो’’ (मत्ती 20:20-28; मरकुस 10:35-45) अन्यजातियों में पाई जाने वाली गद्दी की पूजा के विरुद्ध सिखाया था। याकूब और यूहन्ना ने (अपनी माता को साथ लेकर) विशेष अधिकार और शक्ति पाने की विनती की थी। प्रमुख जगहों के लिए ज़ोर अज़माइश और धक्का-मुक्की पर यीशु ने काफी समझाया था (देखें मत्ती 23:6-12; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47)। आज हमारे बीच भी घमण्ड और अखक्ड़पन की समस्या है। इन पर काबू यीशु द्वारा दिखाए गए विनम्र स्वभाव को अपनाकर पाया जा सकता है (फिलिप्पियों 2:5-8)।

यीशु ने वह सब, जो उस पर बीतने वाला था, कैसे सहा? वह किसी पर चिल्लाया नहीं, उसने किसी को धमकी नहीं दी या कड़ाई से डांटा नहीं। यदि हम यीशु की जगह होते तो हमने परमेश्वर से प्रार्थना की होती, ‘‘हमें प्रेरितों का बिल्कुल नया समूह चाहिए!’’ इसके विपरीत वह आराम से उन्हें

सिखाता रहा, सिखाता रहा! उसने अंगोछा उठाकर उनके पांव धोए (देखें यूहन्ना 13:1-17)। सन्नाटा बहरा करने वाला था। पतरस के बोल पड़ने से कि ''आप मेरे पांव बिल्कुल नहीं धोएंगे'' खामोशी टूटी। दृढ़ता से, परन्तु प्रेम से यीशु ने पतरस को चुप कराया। पांव धुलाने से अधिक पांव धोना आसान है। परमेश्वर के पुत्र ने अंगोछा लेकर अपनी कलीसिया की नींव डालनी शुरू कर दी। उसने स्वयं को ''सेवक'' कहा (देखें लूका 22:27)। यीशु ने यहूदा सहित उन सब के पांव धोए, जो वहां उपस्थित थे। फिर वह प्रेरितों को कई आरम्भिक चेतावनियां देने लगा, परन्तु वे चेतावनियां बिना सफलता के थीं।

पकड़वाने वाले को पहचानना

फसह के भोज पर यीशु ने बताया कि वह पकड़वाया जाने वाला है। हम सोचेंगे कि दूसरों को पता होगा कि पकड़वाने वाला यहूदा होगा, परन्तु ऐसा नहीं था। प्रेरितों को विश्वास नहीं हुआ था कि उनमें से कोई प्रभु को पकड़वाएगा ... परन्तु हर किसी को भय था कि कहीं वही तो नहीं (मत्ती 26:21-25; मरकुस 14:18-21; लूका 22:21-23; यूहन्ना 13:21-30)। यहूदा ने पूछा, ''क्या वह मैं हूं'' (मत्ती 26:25)। यीशु ने प्रेरितों को बताया कि उसका पकड़वाने वाला वही है, जिसे वह ''रोटी का टुकड़ा डुबोकर'' देगा (यूहन्ना 13:26)। जब उसने रोटी का टुकड़ा तोड़कर यहूदा को दिया तो आश्चर्य की बात है कि अन्य प्रेरितों को पता नहीं चला। यहूदा जानता था कि यीशु को मालूम है! (देखें मत्ती 26:25.)

कई साल पहले, रिउल लैमन्स ने यूहन्ना 13:30 पर आधारित ''एण्ड इट वाज़ नाइट'' शीर्षक से एक प्रवचन दिया था, जिसमें कहा गया कि, ''रोटी का टुकड़ा लेने के बाद [यहूदा] तुरन्त बाहर चला गया; और यह रात का समय था।'' परमेश्वर ज्योति है, जबकि पाप अन्धकार है। अन्धेरे में जाने के लिए यहूदा ने ज्योति को छोड़ दिया। यहूदा में शैतान आना रहस्यपूर्ण या अलौकिक नहीं था। यहूदा ने उसे आने दिया और उसका स्वागत किया था। *अन्धकार के लिए रोशनी का त्याग कितना दु:खद है!* यहूदा यूहन्ना 13:34, 35 में कही यीशु की बात कहने से पहले चला गया: ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।'' पाप भयंकर हानि पहुंचाता है; पाप की त्रासदी का एक भाग उसी में है, जो आपके पास नहीं है। यहूदा ने बहुत कुछ खोया! वह जी उठे प्रभु को नहीं देख पाया!

उसके भोज का आरम्भ

यहूदा के निकाले जाने के बाद, यीशु ने अपनी यादगार स्थापित की, जिसे हम प्रभु भोज कहते हैं (मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:17-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)। पढ़ें यूहन्ना 6:48-58. यह प्रभु भोज के विषय में नहीं है, परन्तु यह सही शिक्षा है। उद्धार पाने के लिए हमें मसीह को अर्थात उसके जीवन, शिक्षा तथा उद्धार को आत्मसात करना आवश्यक है।

प्रभु भोज का आरम्भ मण्डली के रूप में किया गया था। आरम्भिक कलीसिया इसमें भाग लेने के लिए इकट्ठी होती थी (प्रेरितों 20:7)। नये नियम की आराधना की शान इसकी सादगी अर्थात रोटी और कटोरे में है।

अन्तिम विवरण

उसके बाद यीशु का ध्यान पतरस पर था, जिसने असीमित निष्ठा का वचन दिया था। यीशु ने कहा कि मुर्गे के तीन बार बांग देने से पहले, पतरस तीन बार उसका इनकार करेगा। पढ़ें मत्ती 26:33-35; मरकुस 14:29, 30; यूहन्ना 13:36-38; लूका 22:31-34 और विवरण देता है। शैतान ने पतरस को चाहा था, परन्तु यीशु ने कहा कि उसने उसके लिए प्रार्थना की है। क्या यीशु ने यहूदा के लिए भी वैसे ही प्रार्थना की थी!

यीशु ने कहां, कब, कैसे प्रार्थना की। ''वास्तव में यहां याजक वाली प्रार्थना'' यूहन्ना 17 अध्याय वाली है। यह प्रार्थना शायद सबसे बड़ी प्रार्थना है, उसने अपने प्रेरितों के लिए, अपने लिए और हमारे लिए प्रार्थना की!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!